HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-I, (Cause of Industrial Revolution)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 65

"औद्योगिक क्रांति के कारण"

(Cause of industrial revolution)

औद्योगिक क्रांति ऐसी क्रांति थी जिसमें बिना युद्ध एवं खून खराबी के इंग्लैंड के साथ साथ पूरे विश्व विकास हुआ। वास्तव में इस क्रांति के जनक अविष्कारक एवं इंजीनियर थे न कि राजनीतिज्ञ एवं राजनीतिक संस्थाएं। इस क्रांति का श्रीगणेश वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरुप हुआ। वैज्ञानिक आविष्कार के साथ कल कारखानों का विकास हुआ और उत्पादन में वृद्धि हुई। उत्पादनओं के कारण बाजारों की खोज प्रारंभ हुई। उद्योग धंधे वाले इलाकों की आबादी बढ़ी। जिससे श्रमिक वर्ग की संख्या बढ़ी। श्रमिकों की सुख सुविधा के प्रश्न ने नई राजनीतिक विचारधारा को जन्म दिया। जिसे समाजवाद का नाम दिया जाता है।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

मानवीय श्रम के स्थान पर यंत्रों का व्यवहार प्रारंभ हुआ। यंत्रों के अनुसार मानवीय श्रम की गतिविधि नियंत्रित होने लगी। इसलिए इतिहास में इसे औद्योगिक क्रांति का नाम दिया जाता है।

औद्योगिक क्रांति के कारण निम्नलिखित थे...

1. वैज्ञानिक उन्नति -

औद्योगिक क्रांति का आधार वैज्ञानिक खोज था। इंग्लैंड में वैज्ञानिक खोज की परंपरा फ्रांसिस बेकन के समय से ही प्रारंभ हो चुकी थी। रॉयल सोसाइटी की स्थापना चार्ल्स द्वितीय के समय हो चुका था। इस संस्था को राजकीय संरक्षण प्राप्त था। इसी संस्था के अधीन काम कर कई वैज्ञानिकों ने ख्याति प्राप्त की। जोसेफ प्रीस्टले. विलियम कैवेडिश तथा हंफ्रे डेविस अपने युग के महान वैज्ञानिक हुए। वैज्ञानिक उन्नति के फलस्वरूप ही इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति हुई।

2. इंगलैंड की जलवायु एवं स्थिति-

इंगलैंड की जलवायु एवं स्थिति ने वैज्ञानिक परिवर्तन में बहुत सहयोग दिया। इंगलैंड एक द्वीप के समान है। चारों ओर समुद्र से घिरा रहने के कारण बाहर के दुश्मन उसपर सुविधा से आक्रमण नहीं कर सकते थे। इंगलैंड का समुद्री किनारा बड़ा और कटा-छटा है। जो बंदरगाहों के लिए बहुत उपयुक्त है। बंदरगाहों के कारण किसी भी स्थान से सुविधा के साथ माल ढोया जा सकता था। देश के अंदर सड़क, नहर एवं नदियाँ

Dr Guddy Kumari (A N D College)

यातायात के दृष्टिकोण से बहुत उपयोगी थी, अतः इंगलैंड की भौगोलिक स्थिति औद्योगिक विकास में सहायक सिद्ध हुई।

3. कोयला और लोहा की अधिकता-

औद्योगिक विकास के लिए कोयला और लोहा प्राण के समान महत्त्व रखते हैं। सौभाग्य से इंगलैण्ड में कोयले और लोहे की खानों की अधिकता थी। दोनों चीजें साथ-साथ मिल जाती थीं। ये खाने बंदरगाहों के निकट अधिक थीं, अतः इंगलैंड में कल-कारखानों को प्रारंभ करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई।

4. पूँजी की वृद्धि-

इंग्लैंड के पास पर्याप्त पूंजी थी। अमेरिका और वेस्टइंडीज के साथ व्यापार के फलस्वरूप इंग्लैंड में पूंजी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थी। 1764 ई. में बंगाल पर अंगरेजों का अधिकार हो चुका था। भारतवर्ष में बंगाल प्रांत सबसे समृद्ध भाग था, अतः विदेशी व्यापार। से अंग्रेज मालामाल हो गए थे। उनकी पूंजी बैंकों में जमा रहती थी। विदेशी कंपनियों को बैंक से पूँजी उधार मिल जाती थी। सुधार आंदोलन के बाद पूंजी का विकास इंगलैंड में तेजी से हो रहा था। इगलैड आर्थिक विकास के कार्यक्रम पर यूरोप के अन्य देशों की तरह कोई प्रतिबंध नहीं था। अतिरिक्त पूजी के बल पर कृषि-क्रांति इंगलैंड में हो चकी थी। उत्पादन में वृद्धि हुई और यंत्रों के सहारे बड़े पैमाने पर इंगलैंड में उत्पादन का

Dr. Guddy Kumari (A.N.D College)

काम प्रारंभ हुआ। नए यंत्रों के आविष्कार में पूंजी लगाने में इंग्लैंड की अर्थव्यवस्था संगठित हो चुकी थी और उद्योग-धंधों के विकास में पूँजी अधिक मात्रा में लगाई जाती थी। यह सुविधा यूरोप के अन्य देशों को प्राप्त नहीं थी।

5. कुशल एवं अकुशल मजदूरों की प्रधानता--

राजनीतिक दृष्टिकोण से ईगलैड एक सुरक्षित देश था। यूरोप के अन्य देशों में धार्मिक अत्याचार से त्रस्त व्यक्ति भागकर इंगलैंड में ही शरण पाते थे। फ्रांस से भागकर बहुत-से कुशल मजदूर इंग्लैंड में बस गए। ऐसे मजदूर व्यापार एवं उद्योग-धंधों के संचालन में इंग्लैंड वालों की सहायता करने के लिए तैयार थे। कुशल मजदूरों ने इंगलैंड के अकुशल मजदूरों को प्रशिक्षित कर उन्हें प्रत्येक प्रकार के कल-कारखानों को चलाने के लायक मजदूर बना दिया। अतः, औद्योगिक क्रांति को सफल बनाने में विदेश से आए हुए कुशल एवं अकुशल मजदूरों का बड़ा हाथ था।

6. मुक्त व्यापार की नीति-

व्यापारिक क्षेत्र में इंगलैंड मुक्त व्यापार (Free Trades) की नीति का समर्थन करता था। इटली, जर्मनी और फ्रांस में व्यापार पर इतने तरह के प्रतिबंध लगे हए थे कि वहाँ उद्योग-धंधों का विकास असंभव हो गया था परंतु, इंगलैंड में मध्यकालीन प्रतिबंधों को पहले नष्ट किया जा चुका था, अतः वहाँ स्वतंत्र रूप से उद्योग-धंधों का विकास हुआ।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

7. बाजार की अधिकता-

1760 ई. के बाद ब्रिटेन का साम्राज्यवादी विकास तेजी से होने लगा। उपनिवेशों में अँगरेजी माल की खपत बढ़ गई। उपनिवेशों से कल-कारखानों को चलाने के लिए इंगलैंड को कच्चा माल प्राप्त हो जाता था तथा तैयार किए हुए माल के लिए उपनिवेश उत्तम बाजार भी बन गए थे। इस प्रकार की सुविधा अन्य देशों को उस समय प्राप्त नहीं थी।

8. राजनीतिक सुरक्षा-

इंगलैंड में राजनीतिक सुरक्षा थी। हैनोवर-युग में व्यक्तिविशेष की स्वतंत्रता सुरक्षित हो गई थी। व्यक्ति के धन अर्जित करने में कोई बाधा नहीं उत्पन्न की जाती थी। धार्मिक प्रतिबंध का बंधन ढीला कर दिया गया था। राजकीय एवं नगर पालिका से संबद्ध कानून व्यापार एवं उद्योग-धंधों के विकास में बाधक थे। इसके अतिरिक्त इंग्लैंड की शासन प्रणाली सुदृढ़ थी। बाहरी आक्रमण की कोई आशंका नहीं थी। ऐसी अवस्था में लोग निर्भय होकर अतिरिक्त पूंजी का व्यवहार उद्योग धंधों में करने लगे।

9. जनसंख्या में वृद्धि-

जनसंख्या में वृद्धि के फलस्वरुप भी औद्योगिक क्रांति को बल मिला। औषधि विज्ञान में उन्नति होने के फलस्वरूप निम्न एवं मध्यवर्गीय परिवार में मृत्यु दर घट गई थी। जनसंख्या में वृद्धि के कारण ब्रिटिश

Dr Guddy Kumari (A N D College)

अर्थव्यवस्था को संतुलित होने का अवसर मिल गया। सर्वप्रथम कल कारखानों को चलाने के लिए मजदूर पर्याप्त संख्या में मिलने लगे। घर में बाजार की कमी नहीं रही और शहरों की आबादी बढ़ गई। बड़े पैमाने पर देश के अंदर और बाहर बाजारों का विस्तार हो जाने से औद्योगिक विकास का काम सरल हो गया।

10. साझेदार कंपनियों की स्थापना-

इंग्लैंड में साझेदारी की कंपनियां खोली गई। बैंक प्रथा का भी विकास हुआ। बैंकों के जरिए कंपनियों को नियंत्रित किया जाने लगा। साझेदारी की कंपनी खुल जाने से सारे पैसे डूबने का भय कम हो गया और किसी साझेदार का हिस्सा गुम नहीं हो सकता था। इस प्रकार की कंपनियों की स्थापना से एक और यदि पूंजी सुरक्षित हो गई तो दूसरी और लाभ का अंश भी बढ़ गया।

11. बड़े पैमाने पर उत्पादन का अनुभव-

व्यवसायवाद का विकास इंग्लैंड में पहले ही हो चुका था। विदेश के साथ व्यापारिक कारोबार पहले ही कायम हो चुका था। अतः बड़े पैमाने पर उत्पादन का अनुभव इंग्लैंड के निवासियों को पहले ही था। जब यंत्र के सहारे उत्पादन का काम प्रारंभ हुआ तब। इसमें उन्हें कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई। दूसरी ओर इंग्लैंड में व्यापार की प्रधान सामग्री तैयार

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

की जाती थी। जिसकी खपत विश्व स्तर पर होती थी। इस प्रकार की सुविधा यूरोप के अन्य देशों को प्राप्त नहीं थी।

12. व्यापार का घनफल-

आबादी के अनुपात में इंग्लैंड का व्यापारिक घनफल अधिक था। यूरोप के प्रमुख राष्ट्र घरेलू समस्याओं में उलझे हुए थे। स्वतंत्र रूप से इंग्लैंड को अपने वैश्विक विस्तार करने का मौका मिल गया। औपनिवेशिक विस्तार के साथ व्यापार का घनफल बढ़ा और श्रम संबंधी बचत के लिए यंत्रों का आविष्कार करना अनिवार्य हो गया। आवश्यकता अनुसार व्यापारिक कारोबार को बढ़ाने के लिए इंग्लैंड में उद्योग धंधों का विकास हुआ।

13. शक्तिशाली राजतंत्र की स्थापना-

1485 ईस्वी में ही शक्तिशाली राजतंत्र की स्थापना इंग्लैंड में हो चुकी थी। राष्ट्र के विकास की ओर राजाओं का ध्यान हमेशा लगा रहता था। राजनीतिक स्थिरता एवं सफल बैदेशिक नीति के फल स्वरुप इंग्लैंड में राजनीतिक स्थिरता आ गई थी। विश्वास पूर्वक कोई भी उद्योगपति पूंजी को किसी काम में लगा सकता था। इस प्रकार की राजनीतिक स्थिरता एवं राजाओं की कृपा अन्य देशों में नागरिकों को प्राप्त नहीं थी।

14. इंग्लैंड की सुविधाजनक स्थिति-

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

व्यापार एवं साम्राज्य के विकास के क्षेत्र में इंग्लैंड के प्रतिद्वंदी राष्ट्र फ्रांस पोलैंड स्पेन जर्मनी एवं रुस थे। इन राष्ट्रों में फ्रांस की स्थिति औद्योगिक क्रांति के पहले बहुत अच्छी थी। फ्रांस व्यापार में इंग्लैंड से आगे था। वहां यातायात के साधन एवं बैंक प्रथा का विकास हो चुका था। परंतु फ्रांस के शासक और सरदार औद्योगिक विकास के प्रति उदासीन थे। सामंतवादी व्यवस्था के फलस्वरुप स्थान विशेष के अनुसार करो की दर अलग-अलग थी। औद्योगिक वस्तुओं की बिक्री पर देश के अंदर भी प्रतिबंध लगा हुआ था। गिल्ड प्रथा एवं एकाधिपत्य की बिक्री के कारण फ्रांस में उद्योग धंधों का विकास रुक गया था। दूसरी ओर प्रतिबंध नहीं रहने के कारण इंग्लैंड औद्योगिक विकास के क्षेत्र में आगे बढ़ गया था। राजनीतिक संघर्ष एवं पूंजी के अभाव के कारण हॉलैंड का व्यापार मंद पड़ गया था। जर्मनी के पास भी पूजी का अभाव था। चुंगी व्यवस्था तथा सैनिक प्रवृत्ति के कारण औद्योगिक विकास की ओर जर्मनी का ध्यान आकृष्ट नहीं हो पाया था। रूस में दास प्रथा तथा जार की क्रूरता के कारण उद्योग धंधों का विकास नहीं हो पाया था।

इस प्रकार यूरोप के सभी प्रमुख राष्ट्रों में इंग्लैंड की स्थिति अधिक सुविधाजनक एवं अनुकूल थी। वहां वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान कार्य प्रारंभ हुआ। इंग्लैंड के सिवा यूरोप की किसी देश में उतनी वैज्ञानिक प्रगति नहीं हुई। इस प्रकार सर्वप्रथम इंग्लैंड में ही औद्योगिक क्रांति का श्रीगणेश हुआ। जिससे पुरा विश्व प्रभावित हुआ।

Dr Guddy Kumar (A N D College)

औद्योगिक क्रांति का मुख्य क्षेत्र कोयला, लोहा और वस्त्र उद्योग था। जिनके उत्पादन में क्रांतिकारी वृद्धि हुई।

धन्यवाद

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)